Total No. of Questions - 3] [Total Pages : 4

(2022)

9263

M.A. Examination

HINDI

(छायावादोत्तर काव्य)

Paper–XIII

(Semester–IV)

Time : Three Hours] [Max. Marks : { Regular : 80 / Private : 100 }

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) हम नदी के द्वीप हैं

हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाय

वह हमें आकार देती है

हमारे कोण, गलियाँ, अंतरदीप, उभार, सैकत, कूल

सब गोलाइयाँ उस की गढ़ी हैं

माँ है वह! है, इसी से हम बने हैं।

(सर्जना के क्षण: पृ. 75)

अथवा

श्रेय नहीं कुछ मेरा

मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सब कुछ को सौंप दिया था–
सुना आपने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था।
वह तो सब कुछ को तथता थी–
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में जाता है। (असाध्यवीणा पृ. 46)

(ख) वह रहस्यमय व्यक्ति
अब तक न पायी गयी मेरी अभिव्यक्ति है,
पूर्ण अवस्था वह
निज-संभावनाओं, निहित प्रभावों, प्रतिमाओं की
मेरे परिपूर्ण का आविर्भाव
हृदय में रिस रहे ज्ञान का तनाव वह
आत्मा की प्रतिमा। (अंधेरे में, पृ. 113)

अथवा

एकाएक टूट गया स्वप्न व छिन्न-भिन्न
हो गए सब चित्र
जागते से फिर याद अपने लगा वह स्वप्न
फिर से याद आने लगे अंधेरे के चेहरे
और तब मुझे प्रतीत हुआ भयानक
गहन मृतात्माएँ इसी नगर कीं
हर रात जुलूस में चलती
परंतु दिन में
बैठती हैं मिलकर करती हुई षडयंत्र
विभिन्न दफ्तरों-कार्यालयों, केंद्रों में, घरों में
हाय, हाय। मैंने उन्हें देख लिया नंगा
इसकी मुझे और सज़ा मिलेगी। (अंधेरे में, पृ. 123)

(ग) मैं प्रारब्ध चंद्रकुल का, सचित प्रताप तेरा हूँ,
बोल रहा हूँ तेरे ही प्राणों के अगम, अतल से।
(उर्वशी, अंतिम अंक, पृ. 148)

अथवा

अतुल पराक्रम के प्रकाश में भी यह नहीं छिपेगा
ताराहर विधु के विलास से ये मनुष्य जनमे हैं।
(उर्वशी, अंतिम अंक, पृ. 149)

3×8=24
(3×10=30)

2. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) छायावादोत्तर कविता के संदर्भ में 'उर्वशी' का मूल्यांकन कीजिए।

(ख) 'अंधेरे में' परम अभिव्यक्ति की खोज की कविता है। इसे स्पष्ट कीजिए।

(ग) दिनकर की काव्य-चेतना को विस्तार से बतलाइए।

(घ) एक काव्य-चिंतक के रूप में अज्ञेय की धारणाओं की व्याख्या कीजिए।

(ङ) 'असाध्य वीणा' का सामाजिक संदर्भ स्पष्ट करते हुए उसकी आज के संदर्भ में प्रासंगिकता बतलाइए। 3×17=51

(3×20=60)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) मुक्तिबोध की कविता सप्तक के किस अंक में प्रकाशित हुई थी और उसका प्रकाशन कब हुआ था?

(ख) 'अंधेरे में' कविता सर्वप्रथम किस पत्रिका में और किस नाम से प्रकाशित हुई थी?

(ग) 'उर्वशी' के प्रकाशन के उपरांत किस पत्रिका में इस काव्य को लेकर विवाद हुआ था?

(घ) 'संस्कृति के चार अध्याय' के लेखक कौन हैं?

(ङ) अज्ञेय ने सप्तक के कितने खंड निकाले और उनके प्रकाशन वर्ष क्या हैं? 1×5=5

(2×5=10)